Yayawari
via bhojpuri

NotNul

चश्मे

विमल चंद पाण्डेय

आवाज

सुधीर कुमार मिश्र

अनुवादक

सुधीर कुमार मिश्र

चश्मे

कहानी

लेखक –विमल चन्द्र पाण्डेय

अनुवादक –सुधीर मिश्र

ईश्वर बृज'' फ़ाउंडेशन के तहत माटी परियोजना के अंतर्गत अनूदित

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: नवम्बर, 2022

जब ओकर गाड़ी आके बहरी रुकल त भोर हो गईला के बादो अबहीं ले चेहरा ना लउके लायक अन्हार रहुवे। मने भोर हो गईल रहे बाकिर अभी झुलफुलाह रहे ओह बेरा। उ आपना घर के गेट के सामने गाड़ी के रोकवा के आपन समान-ओमान उतार के ओह गाड़ी वाला के भाड़ा दे देलस।

गाड़ी के चल गईला के बाद उ आपन समान के साथे थोरे देरी तक ले उ ओहिजे ठाड़ रहल। ओकरा घर वाली कतार में तीन गो अउरी नाया घर बन गईल बाटे। दू गो घरन के बने के खबर त ओकरा मिलल रहे बाकि हई तिसरका प्लाट कब बेचाइल हऽ अउरी घरो बन गईल ?उ अपना घर के घंटी बजवलस।

माई ओकर गेट खोललली आ खोलला के संगही ओकरा के अचरज के भाव से निहारे लगली। का माई ओकरा के चिन्हे के कोसिस करत बाड़ी ? पहिचान के अइसन बड़ संकट ?उ डेरा गईल। का डेढ़ सालन में उ अतना बदल गईल की ओकर माई ओकरा के नइखे चिन्ह पावत ?बार कुछ ढेरे उजर हो गईल रहे बाकिर उ त एही तरे असमय पाकी गईल बा ....। बुझात बा जे ढेर मोटा गईल बानी। बाकि जल्दिये ओकर डर खतम हो गईल रहे।

“आवऽ ...भीतरी आवऽ। ”

“गोड़ लागऽ तानी माई। ” उ गोड़ छुवत बोलल।